

कानों में कंगना शीपक कडानी का सारा साइड ड्रैफ्ट करे।

पाठ्यक्रम - डॉ० सुनील - व. ६ पाठ्यक्रम
एम्प्लॉय कॉलेज, लखनऊ।

श्री गंगा

दिल्ली के एक छोटे से गाँव में
गण्डापुरी में उबर गयी। वह उसकी ~~सहपाठी~~ सहपाठी, सहपाठी
पर मुग्ध हो गयी। उसने उसे न केवल सहपाठी वरन्
अपने हाथों से उसके कानों से कंगना साइड कर
उसके हाथों में पहना दिया। अपने कार्यक्रम की सहाय्य
पर वह कुछ स्वर्णमुद्राएँ देकर एवं किरण के लिए
एक जोड़ी ~~कंगना~~ कंगना लेकर अग्रे बढ़ने के लिए गयी।
जोड़ी २९५ किरण का हाथ उसके हाथ में। सौभाग्य से
~~उसने~~ स्वयं संसाधन से दूर हिमालय के लिए पहना कर
गयी। इन सारी बातों से वह सच रह गयी। वह किरण
कलाप करने सिद्ध गति से दूरले कि वह आश्चर्यजनक रूप से
रह गयी। अर्थात् किरण उसके चरण की लकड़ियों में
बस गयी थी तथापि इसी लकड़ी यह सब बतिया हो गयी।
उसने सोचा भी नहीं था। अतः वह किरण को लेकर
अपने घर आ गयी। जीवन के दिन-लकड़ी-लकड़ी बीतने
लगे। किरण आवश्यक सुकरी थी। निरन्तर अपने सुन्दर से देह
सब रिक्त उस किन्तु वह की प्राकृतिक सुन्दरता में जो सब
की खालिका थी किरण दुःख उसे नहीं पा सकी। नरेश उसे
सौन्दर्य पर कभी विचार नहीं करने कभी कानों से कानों में कभी
कोई आत्म आश्चर्य नकार करवा रहता था। किरण की
अपने काम की दृष्टि आश्चर्यना से प्रथम थी। काल अजस्र
सरिता के समान ~~व्यक्ति~~ प्रवाहित हो रहा था। दूरी बीत नरेश
एक दिन अपने मित्र मीरा के घर गान बोलने गया।
उस दिन उस नरेशी के घर, उसके संगीत एवं उसके गृहे।
पर ऐसा सीमा कि उसकी अपनी पत्नी किरण का रूप उसके
हृदय से उबर गया। वह उस नरेशी के रूप को
उल्लासित हो गया। उसे प्रथम ~~करने~~ करने के लिए नरेश-नरेश
आश्चर्य कीमती बनकर ही साड़ी काम सुन्दर उल्लास लेकर
उसके समक्ष उपस्थित होने लगा। वह नरेशी की नरेश की



अपने दुश्मनों पर नज़राने लगाया। चौर-चौर
 नरेन्द्र ने किरण के सारे भाइयों-बहनों को उस
 नृत्य की पर लुटा दिया। किरण से सारा घर-घर
 के छुटाने के आकर वह घर से आमतौर रहने लगा।
 चौर-चौर आरक्षणों का कोष खाली हो गया। भद्र
 जानकर कि वह नृत्य नरेन्द्र से दूर होनी चाही।
 नरेन्द्र को उसके बगैर नौन नया। वह भी मेवा
 आया। पहले समूह खूब गया। किरण भद्र युग
 कर पदों खोकर गिर पड़ी। उसका हृदय इत
 अचलाशित आयाप से खंड-खंड हो गया। वह व्युत्प
 हो गया। किरण नरेन्द्र को पहले कोइ आनंद नहीं प
 उसे ही किसी आरक्षण की आरक्षणों की लिये देकर
 उसे अपनी का साहसपूर्ण प्रतिक्रिया लगे। इतनी कम में
 उसने किरण की सालमारी और उसके बगैर हीनमा
 किरण को कुछ नहीं मिला। डरकर उसने किरण के
 पूर्ववर्ति प्रकल्पित कि उसके पास कोई आरक्षण ही
 है कि नहीं। उस में किरण ने लगे-लगे ही चौर-च
 अपना बंधन टटोकर दिखा दिया-वही कामों में कंग
 उसके आगे को चरकर बैठे थे। इतने के साथ किर
 का देहात हो जावा है और नरेन्द्र को किरण से यथा
 मिलान की लड़ लड़ी गये ही आती है। ~~उस~~ अपनी बहन
 वह पदों खोकर खलवा है और कहानी समाप्त हो जा